ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218
PP. No.- 77-79

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- IV, Issues-30, YEAR- Oct.-Dec.-2023

सबको अमर देखना चाहता हूँ, सबकी खबर देखना चाहता हूँ

डॉ0 विजय कुमार वर्मा

एसो0 प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, जवाहरलाल नेहरू स्मारक स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बाराबंकी (उ0प्र0) भारत

Received-16.10.2023, Revised-22.10.2023, Accepted-27.10.2023 E-mail: dr.vijaikumarverma@gmail.com

सारांशः ***दूधनाथ सिंह साठोत्तारी पीढ़ी के सबसे बड़े कथाकार के रूप में हमारे सामने आते हैं। विद्रोह उनकी कथाओं का मूल स्वर है। यह विद्रोह वह व्यंग्य, हास–परिहास के माध्यम से करते हैं। 'सबको अमर देखना चाहता हूँ' संस्मरण में उनके द्वारा लिखे गये जिन पाँच लोगों को शामिल किया गया है उसमें से हाशिए पर का कोई भी नहीं है। सदैव हाशिए के समाज के लिए लड़ाई लड़ने वाले दूधनाथ सिंह के संस्मरण में वे केन्द्र में नहीं आये। उनके कहानी, उपन्यास, नाटक, आलोचना, संपादन आदि में वे उनके हिमायती के रूप में नजर आते हैं। इन पाँच संस्मरणों में तीन संस्मरण इलाहाबाद के लेखकों सतीश, जमाली, अमृत राय और सत्य प्रकाश पर है। इसमें एक संस्मरण राजनीतिज्ञ चंद्रशेखर जी पर है। पाँचवा संस्मरण कहानीकार–आलोचक विजय मोहन सिंह पर है।***

कुंजीभूत शब्द– साठोत्तारी पीढ़ी, कथाकार, व्यंग्य, हास–परिहास, संस्मरण, उपन्यास, आलोचना, संपादन, हिमायती, उद्घटन।

इस पुस्तक का पहला संस्मरण सतीश जमाली पर है, जिसकी शुरूआत होती है –"मैंने कभी यह जानने की कोशिश नहीं की कि सतीश जमाली इलाहाबाद क्यों आया। मैं अपने दोस्तों की जातीय जिन्दगी के बारे में तफसील से जानकारी हासिल करने में रूचि नहीं लेता।"[1] दूधनाथ सिंह सतीश जमाली द्वारा बताये हुए किसी रहस्य का उद्घाटन करते हुए एक पहेली की तरह करते हैं – "यह तो सिर्फ मुझे ही मालूम है, लेकिन मैं उसमें मरते दम तक किसी को शामिल नहीं करूँगा। सतीश जैसे यारबाश इंसान ने पहली बार अपनी किसी दुखती रग के बारे में 'कन्फेस' किया मुझे पहले तो अपने कानों पर विश्वास नहीं हुआ।"[2] दूधनाथ जी एक खुशमिजाज व्यक्ति थे और अपने दोस्तों से पूरा वास्ता रखते थे।

सतीश जमाली के बारे में लिखते हैं कि "शायद सतीश को किसी भी औपचारिकता, किसी भी दोस्ती–दुश्मनी यारबाजपन, किसी भी तरह की सैडस्ति टिप्पणी या किसी के किसी भी कारनामे पर कोई निष्कर्षात्मक टिप्पणी करने में कोई रूचि नहीं रह गयी।"[3] उन्हीं के बारे में बताते हुए वे आगे लिखते हैं कि "कुछ लोग थे जिनसे जिन्दगी थी, जिनके कारण लिखना था। अब ठहाके थे। सब इधर उधर उस रात मुझे लगा चाहे भले महीनों में उसके यहाँ न जाऊँ, अगल–बगल (आर–पार) रहने में एक निश्चिन्तता थी। जब चाहुँगा, आऊँगा, चल दूँगा और सारा दिन हम बैठे रहेंगे और बात करेंगे। और टिप्पणियाँ और पुरानी यादें और ठहाके और उमस और टूटते हुए भी सुखी प्रसन्न।"[4] दूधनाथ सिंह की यही खासियत थी कि वह जब भी लिखते थे तो अपने अन्दर के भावों को पन्ने पर उलट देते थे और यही सतीश जैसा भाव वह अपने अन्य मित्रों के साथ भी रखते थे।

हिन्दी साहित्यकारों पर एक आरोप लगता है कि वे कंजूस होते हैं, लेकिन दूधनाथ सिंह सेमिनार–गोष्ठी में जाते थे तो उसकी फीस अपनी जेब से भरते थे। इससे उलट कंजूस लोगों से लड़ भी जाते थे। आम सहृदय इन्सान की तरह दूधनाथ जी जब कहीं जाते थे तो अपने पूर्व परिचित सुंदर लोगों के बारे में जरूर पूछ लेते थे कि वे कहाँ हैं? वे सौन्दर्य के उपासक कम पुजारी ज्यादा थे। इतने सरल एवं वाक कुशल कि सभी से तुरंत जुड़ जाते थे। सौन्दर्य के प्रति उनका नजरिया ठेठ गंवई था। वे लिखते हैं "..... हमारी तरफ गोल गाल बबुआ चेहरे सुन्दर माने जाते हैं। हमारा सौन्दर्य–बोध कुछ–कुछ वैसा ही था।"[5] सौन्दर्य के साथ वह गाँव–गँवई के लोगों के आचार व्यवहार के प्रति भी वो लोगों को बताते चलते हैं कि बात–बात पर झगड़ा लड़ाई करना एक आम बात है और अगर कोई छुट भैया नेता ही मिल जाये तो भेड़ चाल की तरह उसके पीछे चल देते हैं जो किसी को भी मार–पीट सकते हैं। वो अपने बारे में भी बयॉ करते हैं और लिखते हैं कि "मैं एक छुपा रूस्तम था। तब हम गाँव भर को लठ लेकर चौलेंज करेंगे, मारपीट करेंगे, मुकदमे लड़ेंगे, घर पक्का बनवाएंगे – मैं एक छोटे किसान परिवार से आता था।"[6] पढ़ कर लगता है कि अगर बड़े किसान परिवार से होते तो फिर क्या होता। दूधनाथ जी हर एक पर अपनी पैनी नजर तो रखते ही थे दूसरों से रखवाते भी थे। इससे सच्चाई सबके सामने उजागर भी हो जाती थी। स्वामी ओंकरानन्द के बारे में खोलकर लिखते हैं "उनका दूर–दराज कहीं घर–द्वार, बाल–बच्चे, परिवार, कलह और अन्तर्कलह था, जिसे छोड़कर वे चले आये थे और चुपके–चुपके जुड़े भी थे। हर सन्यासी की जड़ किसी न किसी गृहस्थी में मिल जाएगी।"[7]

दूधनाथ सिंह चन्द्रशेखर जी द्वारा लिखी उनकी जेल डायरी की तुलना भगत सिंह की जेल डायरी से करते हैं। चुनाव का समय है इस समय वोट की चिन्ता करते हुए और ठाकुर वोटों को साधने के लिए काशीनाथ सिंह और दूधनाथ सिंह को बलिया बुलाया जाता है। ठाकुरों का अन्य छोटी जातियों पर खासा प्रभाव है, इनके द्वारा उनका वोट भी साधा जा सकता है। वो लिखते हैं – "ठाकुर लोग नाराज हैं।

कितना वोट होगा इस गाँव का? उन्होंने पलटकर पूछा पचास–हजार के आस–पास' मैंने कहा इतना कैसे? इनके बहुत सारे 'सेटेलाइट्स' भी तो है। मैंने कहा। सेटेलाइट क्यों? उन्होंने आश्चर्य से पूछा छोटे–छोटे पुरवे। अहीरों, कुर्मियों, चमारों, कोइरियों और सभी निचली जातियों के और ठाकुर लोग इनको हाँक कर ले जायेंगे और जहाँ चाहेंगे वहाँ वोट गिरेगा। उसी वोट से आप जीत सकते हैं, ठाकुरों–भूमिहारों के वोट से नहीं।"[8] आपातकाल के दौरान लिखी इस डायरी पर टिप्पणी करते हुए वो लिखते हैं "संभवतः आपातकाल पर उनकी जेल डायरी उस वक्त के ऐतिहासिक परिदृश्य को जानने के लिए सर्वोत्तम रचना है। मुझे उनकी भाषा और अभिव्यक्ति क्षमता पर गर्व हुआ।"[9]

अनुरूपी लेखक/संयुक्त लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- IV, Issues-30, YEAR- Oct.-Dec.-2023

इस संस्मरण में अमृतराय पर लिखा गया संस्मरण है – संयुक्त मोर्चे का अपराजेय योद्धाः अमृतराय। इसके बारे में कहा जाता है कि यह अमृतराय की संयुक्त मोर्चे संबंधी थीसिस का बचाव ज्यादा है संस्मरण कम है। अमृतराय की 'साहित्य में संयुक्त मोर्चा' अब बरसों से हाथ नहीं लग रही। दूधनाथ द्वारा 2006 में कभी पढ़ा गया था। उसके लिखे जाने के दशकों बाद वो टिप्पणी करते हैं "अमृत के तथ्यों को उस वक्त लोगों ने उड़ा दिया। उनकी वाक्य–दर–वाक्य बहस, उनकी आत्मालोचना, उनके निष्कर्षों को लोगों ने फिजूल की आवेशात्मक अभिव्यक्ति की संज्ञा दी। लेकिन मेरा ख्याल है कि वह एक किताब रामविलास जी के सारे साहित्य पर भारी पड़ती है।"[10] दूधनाथ सिंह की एक किताब पर अमृतराय ने टिप्पणी की थी। उस टिप्पणी पर उनका कहना है कि "वे आदर्शों की लेखकीय और रचनात्मक आदर्शों की रक्षा के लिए जान लड़ा देने पर उतारू हैं, लेकिन उनकी एक शर्त है – मार्क्सवाद।"[11]

सतीश जमाली और अमृतराय में एक अन्तर यह था कि सतीश जमाली बाहर से आकर इलाहाबाद में बसे थे और अमृतराय के खून में ही इलाहाबाद बसता था। प्रेमचंद जैसे पिता की भरी पूरी विरासत और समृद्ध पृष्ठभूमि उनके साथ थी। हलांकि वे इसे सुनकर लगभग बौखला सा जाते थे।

दूधनाथ सिंह के संकलन का शीर्षक संस्मरण उन्हीं की पीढ़ी के लेखक, आलोचक, कहानीकार विजय मोहन सिंह पर है। जब दूधनाथ सिंह वर्धा प्रवास पर थे तब विजय मोहन सिंह से नजदीकियां ज्यादा बढ़ी और बची खुची नागार्जुन सराय में। उनकी दिनचर्या का वर्णन करते हुए दूधनाथ सिंह लिखते हैं कि "विजय मोहन की अजब दिनचर्या थी नागार्जुन सराय में। सब कुछ नियम–कानून से। सबेरे उठना। पता नहीं चाय पीते थे या नहीं। लेकिन नियमित और वक्त की पाबन्दी के साथ नाश्ता। नाश्ते में हर तरह के फल, मेवे और जो भी हो। नाश्ता करने के बाद वे अक्सर सो जाते। 3 घंटे, 4 घंटे। बिल्कुल सन्नाटा, उनके कमरे में। फिर वे उठते और शायद नहाते–धोते। 'मेस' बगल में ही था लेकिन वे कभी 'मेस' में सार्वजनिक रूप से सबके साथ नहीं खाते। उनका खाना बाकायदा परोसकर 'मेस' में लाया जाता। उनके लिए सब्जियाँ अलग से बनतीं। दाल भी – यानी सब कुछ।"[12] 'सबको अमर देखना चाहता हूँ' में सिर्फ विजय मोहन सिंह ही आते हैं, शेष सभी तो उनकी आँख के सामने ही वर्तमान दृष्टि के शिकार हो गए। विजय मोहन सिंह को याद करते हुए लिखते हैं "कुछ लोगों का व्यक्तिव और रखरखाव ही ऐसा होता है कि उन्हें सभी प्यार करते हैं। मेरे जैसे कुछ लोग दूसरी श्रेणी में उनकी ठीक उल्टी श्रेणी में आते हैं।

इसके ठीक उलट उन्हें नकली आचार व्यवहार से सख्त नफरत थी।"[13] दूधनाथ सिंह आगे लिखते हैं कि वे दोनों ठाकुरों के प्रसिद्ध गाँव केसठ चौगाई के रहने वाले थे। लेकिन लेखक के भी ठाकुर होने के नाते विजय मोहन ने दूधनाथ सिंह को कोई तवज्जो नहीं दी थी। "शिवाजी ने परिचय कराया तो विजय मोहन ने मुझे कोई खास तवज्जों नहीं दी।"[14] यही दृश्य एक बार वर्धा–प्रवास के दौरान हुआ। एक ठाकुर शोधार्थी उनको ठाकुर होने के नाते अपनी थीसिस पर टिप्पणी लिखवाने आया था तो उसकी थीसिस कूड़ेदान में डाल कर चले गए, जबकि उसके शोध निर्देशक उस थीसिस की भूरी–भूरी प्रसंशा करते नहीं थकते थे। बाद में जब किसी ने शोध निर्देशक को बताया कि आप द्वारा कराया गया शोध नागार्जुन–सराय के कूड़ेदान में शोभा पा रहा है। उसे मँगाकर सुरक्षित रख सकते हैं।

विजय मोहन सिंह को याद करते हुए वे लिखते हैं कि एक बार दोनों लोग नामवर सिंह के घर दारू पीने जाते हैं और यह दारू विजय मोहन सिंह खरीद कर ले जाते हैं वे विजय मोहन से पूछते हैं – "तुम दो बोतलें क्यों लाये। खत्म तो एक भी नहीं हुई? मैंने कहा विजय मोहन चुप और एक पूरी बोतल वहीं छोड़ आये।"[15] नागार्जुन–सराय में रहते हुए दूधनाथ सिंह, विजय मोहन सिंह का उठना फिर नाश्ते के बाद सोना फिर उठना नहाना आदि ही नहीं किस अतिथि लेखक के यहाँ कितना दूध आता है? कितने दूध की चाय बनती है? कौन पीता है? कौन पिलाता है? कौन आता है कौन जाता है? कौन साथ निभाता है? इतनी पैनी नजर रखते थे कि सभी अतिथि लेखन इसे अपनी स्वतंत्रता पर हमला समझकर उन्हें तिरछी नजर से देखते रहे।

सत्य प्रकाश मिश्र के चेहरे का शर्मीलापन, उनकी लम्बी बीमारी, उनका भोगा हुआ कष्ट अस्पताल में अपनी मर्दानगी के अपमान का उनका अहसास सब कुछ को दूधनाथ सिंह ने हार्दिकता और संवेदना के साथ अंकित किया है। उनकी पीड़ा में वे स्वयं को शामिल कर लेते हैं। उनकी दक्षिण की यात्रा वस्तुतः इसी दुआ की तलाश का एक हिस्सा थी। अरविन्द आश्रम के बारे में उनकी टिप्पणी है "सबसे अच्छी बात यह थी कि आश्रम के सन्यासियों या निवासियों के लिए कोई ड्रेस कोड नहीं था। कोई चीवर नहीं दिखा। वहाँ सब जीवन और जीवन के उत्सवों से हारे हुए डरावने से लोग थे। वे पढ़े–लिखे, विद्वान या इनमें से कुछ भी नहीं होंगे। पूरे वातावरण में थकान और मृत्यु की एक नामालूम–सी गंध थी।"[16] वे लिखते हैं कि मैं नर्वस और डरपोक आदमी हूँ। उनके व्यक्तित्व में विरोधाभास दिखता है जो उनकी फितर भी है।

उनके अन्दर गाँव–देहात का वह इन्सान भी बसता है जो थोड़ी–मोड़ी शरारत भी करता रहता है। शरारती तत्त्व का नमूना देखें। "गणेश मंदिर पंडिचेरी जहाँ दर्शन को गए हैं। गणेश आशीर्वाद दे रहे हैं ऐसे अवसरों पर मेरे मन में ठीक उल्टी कल्पनाएँ उठती हैं मान लो हाथी कभी बिगड़ जाय और किसी भक्त को पावों तले कुचल दे। मैं थोड़ी दूर पर सड़क किनारे खड़ा था।"[17] ये शरारती तत्त्व उनमें जीवन पर्यन्त बना रहा। अपनी इसी मस्तीखोर आदतों के कारण वे लोगों के बीच बहुत जल्दी घुलमिल जाते थे। यहाँ एक बात और गौर करने लायक है वह है दूसरे की चुगली करना। यह चुगलखोरी उनके साहित्यिक जीवन का हिस्सा भी रही। इतना सब कुछ होने के बावजूद वो एक भावुक ह्रदय के स्वामी थे, वे लिखते हैं "मैं तो किताबों के चरित्र के साथ भी रोने लगता हूँ। कविता की एक अच्छी लाइन पढ़ते वक्त मेरा गला भर आता है।"[18] दूधनाथ जी इलाहाबाद की बहुमूल्य साहित्यिक परम्परा के शायद अंतिम साहित्यकार थे। यह वही शहर है जिसने छायावाद के तीन स्तम्भ पन्त, निराला और महादेवी वर्मा की समर्थ साहित्य साधना से इलाहाबाद का नाम पूरे भारत में गौरवान्वित किया। बच्चन, सुभद्रा कुमारी, मलूकदास, गिरिधर कविराय, साही का तो यह शहर ही था।

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- IV, Issues-30, YEAR- Oct.-Dec.-2023

अमरकांत, ज्ञानरंजन, मार्कण्डेय जैसे कहानीकारों की यह सृजनभूमि रही है। इसी उज्जवल परम्परा के आखिरी सिपाही थे दूधनाथ सिंह। वे नई पीढ़ी के मित्र, मार्गदर्शक और अभिभावक थे। आज की नई पीढ़ी निरन्तर उनसे ऊर्जा प्राप्त करती रहेगी।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. सिंह, दूधनाथ, – 'सबको अमर देखना चाहता हूँ', साहित्य भण्डार, इलाहाबाद 2017, पृ0 13.
2. वही, पृ0 14.
3. वही, पृ0 16.
4. वही, पृ0 16.
5. वही, पृ0 21.
6. वही, पृ0 23.
7. वही, पृ0 23.
8. वही, पृ0 28.
9. वही, पृ0 31.
10. वही, पृ0 32.
11. वही, पृ0 33.
12. वही, पृ0 48.
13. वही, पृ0 50.
14. वही, पृ0 51.
15. वही, पृ0 62.
16. वही, पृ0 92.
17. वही, पृ0 93.
18. वही, पृ0 102.

*****